



**रामगढ़ उपचुनाव**  
महागठबंधन प्रत्याशी  
बजरंग महतो ने  
नामांकन दाखिल किया



**रामगढ़ (आजाद सिपाही)**  
रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव में  
महागठबंधन प्रत्याशी बजरंग  
महतो ने मंगलवार को नामांकन  
दाखिल किया। इस मौके पर  
कांग्रेस प्रदेश प्रभारी अविनाश  
पांडे, प्रदेश अध्यक्ष राजेश टाकुर,  
मंत्री आलमगीर आलम, सत्यानंद  
भोक्ता, बादल पत्रेलख और जोवा  
मांझी, सांसद गीता कोडा, विधायक  
अंबा प्रसाद, उमाशंकर अंकेला और दीपिका सिंह पांडे,  
पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकात  
सहाय, पूर्व विधायक बंधु तिर्की,  
पूर्व संसद शैलेंद्र महतो समेत पार्टी  
के अन्य पदविधायियों ने भी उन्हें  
महतो को बाद अव एसपी को सम्मान  
करते हैं। इसके जवाब में  
विधायक ने कारोबार से संबंधित  
दस्तावेज जमा करने के लिए समय  
मांगा।

## विधायक कैश कांड : खिजरी के कांग्रेस विधायक से इडी ने की पूछताछ माझिंग का था पैसा, आदिवासी दिवस पर पर खरीदारी करने जा रहे थे: राजेश कच्छा

- माझिंग से संबंधित कागजात जमा करने के लिए मांगा समय
- विधायक नमन विकसल कोंगाड़ी से आज होगी पूछताछ



आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विधायक कैश कांड में पूछताछ के दौरान मंगलवार को खिजरी विधायक राजेश कच्छा ने इडी के अधिकारियों को बताया कि कोलकाता में बरामद पैसा उनके माझिंग के कारोबार का था। तीन विधायक आदिवासी दिवस के मौके पर अपने इलाके में साझी-धोती और फुटबॉल बांटने के लिए खरीदारी करने गये थे। सरकार को अस्पर करने की साजिश में कहीं से शामिल नहीं थे। उन्हें फंसाया गया है। इडी के अधिकारियों ने पूछा कि माझिंग का व्यापार काम करते हैं? इसके जवाब में विधायक ने कारोबार से संबंधित दस्तावेज जमा करने के लिए समय मांगा।

इडी के अधिकारियों ने उन्हें समय दे दिया है। इसी मामले में तीसरे कांग्रेसी विधायक नमन विकसल कोंगाड़ी से पूछताछ होनी है। उन्हें भी जनवरी में ही हाजिर होना था, पर वे भी नहीं आये और इडी से दो हफ्ते का समय मांगा था। कांग्रेस निलंबित और कैश कांड के आरोपी विधायकों में से एक नमन को भी दूसरी बार नोटिस भेजा गया था।

रामगढ़ (आजाद सिपाही)

रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव में

महागठबंधन प्रत्याशी बजरंग

महतो ने नामांकन दाखिल किया।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह सीट कांग्रेस

की थी, कांग्रेस की ही रहेगी।

# चौतरफा घिरते जा रहे हैं नीतीश कुमार

■ राजद विधायकों के प्रहार के बाद अब अपने भी बना रहे निशाना  
■ 'आरयूसी फैक्टर' बन रहा है बड़ी चुनौती, इससे पार पाना होगा मुश्किल

पिछले साल अगस्त में बड़े तामझाम से बिहार में बड़ी महागठबंधन की सरकार के मुखिया और 'राजनीति के पलट दूचा' नीतीश कुमार इन दिनों बहुत बेचैन हैं। उनकी हालत 'सांप छछूदर' जैसी हो गयी है। राजद-कांग्रेस से दोस्ती उन्हें न निगलते बन रही है और और बीच-बीच में वह यदा-कदा प्रधानमंत्री पद की अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को सामने लाने से परहेज भी नहीं कर पाए रहे हैं।

तो सत्ता के मोह पाश से मुक्त हो चके हैं और 'मर जायेंगे, लैंकिं भजपा के साथ नहीं आयेंगे' जैसा बयान देना नीतीश कुमार की मजबूरी बन गयी है। इन्हाँ ही नहीं, अब तो अपने भी उन्हें चुनौती देने लगे हैं। जदयू संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष और कभी अपने

खासमरमास कुशवाहा भी इन दिनों आस्रीपी सिंह की राह चल पड़े हैं और बिहार की सियासत में धीरे-धीरे 'आरयूसी फैक्टर' भी जोर पकड़ रहा है, जिसका असर नीतीश कुमार के साथ गैर-भाजपाई गठबंधन और बिहार की सियासत पर

पड़ने के आसार अभी से नजर आने लगे हैं। यह फैक्टर आस्रीपी सिंह, उपेंद्र कुशवाहा और चिरण पासवान का वह त्रिकोण है, जिसके आगे नीतीश कुमार की सभी रणनीति कमज़ोर पड़ती दिख रही है। ऐसे में यदि 2024 से पहले बिहार की सियासत में कोई बड़ा 'खेल' हो जाये, तो कोई आश्वर्य नहीं होगा। नीतीश कुमार के सामने लगातार गहरात सकट के तमाम पहलुओं का विश्लेषण कर रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।



राकेश सिंह



को 'कमज़ोर' और 'भाड़े का नेता' तक बता दिया। हट तो तब ही गयी, जब राजद के इन नेताओं को नेटिस जारी करने के बाद उड़ान थी, उसी राजद के नेता नहीं जाने दे रहे हैं। इन्होंने कोई भौमिका हाथ से नहीं जाने दे रहे हैं। पहले चेताओं ने नीतीश कुमार पर आरोप लगाना शुरू कर दिया। अब तो उनके ही नेताओं ने उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। नीतीश कुमार ने जिस राजद के साथ दोबारा दोस्ती कर प्रशान्तमंत्री पद की अपनी महत्वाकांक्षा को लिया जाए। वह इन दिनों में अनीव किस्म के राजनीतिक दबाव में है। 2024 के लोकसभा चुनाव में अपी एक साल का समय है, तरफ भाजपा विरोधी दलों को एकजुट करने में जुटे हुए हैं, तो उनके ही नेता बिहार में विवादित बयान देकर नीतीश के लिए परेशानी खड़ी की, तो उसके बाद राजद विधायक एकजुट करने से दो दोष हाथ आगे वहाँ उनके ही नेता बिहार में नीतीश कुमार

## नीतीश के लिए परेशानी बनेगी तिकड़ी

बिहार में जारी सियासी

घमासान के बीच नीतीश कुमार को 'आरयूसी फैक्टर' परेशान कर सकता है। कहा जा रहा है कि अगर यह फैक्टर काम कर गया, तो नीतीश कुमार के साथ साथ महागठबंधन सरकार की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। यहीं नहीं, 2024 के लोकसभा चुनाव में यह फैक्टर महागठबंधन के लिए नुकसान करने वाला हो सकता है। उपेंद्र कुशवाहा जदयू में हैं। अरसीपी सिंह फिलहाल किसी पार्टी से नहीं जुड़े हैं। वहीं चिरण पासवान की खुद की पार्टी है। उनके भाजपा से अच्छे संबंध हैं। चिरण पासवान खुद को पीएम मोदी का 'हुमान' बताते हैं।

जदयू से नाराज हैं नीतीश के 'खास'

अरसीपी सिंह हों या उपेंद्र कुशवाहा, दोनों ही नीतीश कुमार के खास हुआ करते थे। अरसीपी सिंह फिलहाल किसी पार्टी से नहीं जुड़े हैं। वहीं चिरण पासवान की

दूसरी ओर नीतीश कुमार भाजपा भाड़ा परियोगी परियों को एकजुट करने में खड़े हैं। वह प्रत्यक्ष तौर पर खुद को भाजपा विरोधी दलों की एकजुटता का शिल्पकार बताते हैं, लेकिन इसमें अकसर उनकी महत्वाकांक्षा की झलक भी मिल जाती है। इसका असर आपने पैर में कुल्हाड़ी कैमे मारे गये।

## रिविका हत्याकांड के खुलासे की उम्मीद जगी

आजाद सिपाही संवाददाता

डॉक्टरों ने पोस्टमार्टंग रिपोर्ट पुलिस को सौंपी

मुख्य आरोपी नैनुव कंग अंगी गी पुलिस की गिरफ्त से बाहर

### एफएसएल और डीएनए रिपोर्ट का इंतजार

सूरों की मानें तो अभी जिले की पुलिस दो रिपोर्टों को इंतजार कर रही है। ये दो रिपोर्ट एफएसएल और डीएनए रिपोर्ट हैं। जिले के एसपी अनुरंजन किस्योड़ी की मारे, तो जल्द ही इसका खुलासा किया जायेगा। कुछ जरूरी जांच रिपोर्ट अभी नहीं मिली है। उसी का इंतजार किया जारा है।

सूरों की मानें तो अभी जिले की पुलिस दो रिपोर्टों को इंतजार कर रही है। ये दो रिपोर्ट एफएसएल और डीएनए रिपोर्ट हैं। जिले के एसपी अनुरंजन किस्योड़ी की मारे, तो जल्द ही इसका खुलासा किया जायेगा। कुछ जरूरी जांच रिपोर्ट अभी नहीं मिली है। उसी का इंतजार किया जारा है।

आरोपियों के खिलाफ न्यायालय में चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी में है। इसके लिए 17 मार्च तक का समय है।

### मुख्य आरोपी अब भी पकड़ से बाहर

जिलिका हत्याकांड मामले को लेकर प्रखंड में आदिवासी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। पुलिस अभी तक मुख्य आरोपी का कोई सुराग नहीं ढूँढ़ पायी है। जबकि रिविका के परिवार अंसारी सहित 10 लोगों को जारी कर रही थी। हत्या का रेकिंग जारी है। जब वे चार्जशीट दर्ज करने और सबूत मिटाने के आरोपी में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों ने पुलिस को बताया था कि रिविका की हत्या पैरों से भेजा जाना देता है। जिसके बाद ही पुलिस को पोस्टमार्टंग की फाइल रिपोर्ट मिली। पुलिस अब

था। अभी जब पुलिस के हाथ पोस्टमार्टंग की पूरी रिपोर्ट मिल जायेगी, तब सही बता सामने आयेगी।

### क्या है रिविका हत्याकांड

जिलिका हत्याकांड के साथबंगज जिले के बोरियो प्रखंड में आदिवासी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। पुलिस अभी तक मुख्य आरोपी का कोई सुराग नहीं ढूँढ़ पायी है। जबकि रिविका के परिवार अंसारी सहित 10 लोगों को जारी कर रही थी। हत्या का रेकिंग जारी है। जब वे चार्जशीट दर्ज करने और सबूत मिटाने के आरोपी में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों ने पुलिस को बताया था कि रिविका की हत्या पैरों से भेजा जाना देता है। जिसके बाद ही पुलिस को पोस्टमार्टंग की फाइल रिपोर्ट मिली। पुलिस अब

### हाइकोर्ट से टेरर फॉरिंग मामले में प्रेम विकास सिंह की जमानत याचिका खारिज

रांची। ज्ञानखंड हाइकोर्ट के न्यायाधीश जरिस्टस रंगोन मुख्यालय और जरिस्टस राजेश कुमार की खांबींठी ने मंगलवार के प्रेम विकास उर्फ मंटु सिंह की जमानत देते हुए बोला।

सुनवाई के बाद खंडपीठ ने याचिका खारिज कर दी है।

एनआरए और याचिकाकर्ता की ललीवा पूरी सुनने के बाद हाइकोर्ट ने प्रेम विकास सिंह की जमानत अर्जी तुकराते हुए उसे जमानत देने से इनकार कर दिया है।

प्रेम विकास सिंह की ओर से संबंधित दस्तावेज के प्रश्नों को उत्तर देने की जिमानत देते हुए उसकी जमानत देने की अपील की जारी है।

उत्तराधिकारी ने याचिका खारिज कर दी है।

एनआरए और याचिकाकर्ता की ललीवा पूरी सुनने के बाद हाइकोर्ट ने प्रेम विकास सिंह की जमानत अर्जी तुकराते हुए उसे जमानत देने से इनकार कर दिया है।

प्रेम विकास सिंह की ओर से संबंधित दस्तावेज के प्रश्नों को उत्तर देने की जिमानत देने की अपील की जारी है।

उत्तराधिकारी ने याचिका खारिज कर दी है।

एनआरए और याचिकाकर्ता की ललीवा पूरी सुनने के बाद हाइकोर्ट ने प्रेम विकास सिंह की जमानत अर्जी तुकराते हुए उसे जमानत देने से इनकार कर दिया है।

प्रेम विकास सिंह की ओर से संबंधित दस्तावेज के प्रश्नों को उत्तर देने की जिमानत देने की अपील की जारी है।

उत्तराधिकारी ने याचिका खारिज कर दी है।

एनआरए और याचिकाकर्ता की ललीवा पूरी सुनने के बाद हाइकोर्ट ने प्रेम विकास सिंह की जमानत अर्जी तुकराते हुए उसे जमानत देने से इनकार कर दिया है।

प्रेम विकास सिंह की ओर से संबंधित दस्तावेज के प्रश्नों को उत्तर देने की जिमानत देने की अपील की जारी है।

उत्त







# संपादकीय

## भारत भी सतर्क रहे

अमेरिका के संवेदनशील क्षेत्रों के ऊपर मंडराते चीनी गुब्बारे को मार गिराये जाने के बाद दोनों देशों के रिश्तों एक बार पिर पुराने मोड़ में चले गये हैं। डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में डेंड वार के चलते दोनों देशों के रिश्तों में जो गिरावट देखी गयी, वह वाइट हाउस में राष्ट्रपति जे बाइडेन के आ जाने के बाद भी कई कारोंपों से बही ही रही। यूक्रेन युद्ध के सबल पर चीन का रुसी खेम में नज़र आना तो एक बड़ी कज़ह रही ही, ताइवान के एक और फ्लैश प्लाईट के रूप में उभरने से रही सही कसर भी पुरी हो गयी। फिर भी कूटनीति अपना काम करती रही और धीर-धीर रिश्तों पर जीव बर्फ पिघलने के आसार दिखायी देने लगे। पांच साल बाद अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी बिल्कन के चीन जाने का कार्यक्रम तब हुआ था, लेकिन गुब्बारा प्रकरण का पहला साइड इफेक्ट यही हुआ कि बिल्कन का चीन दौरा रद्द हो गया। उधर, चीन ने भी गुब्बारा मार गिराये जाने के बाद तत्त्व बयान है। यूं तो अमेरिका के आरोपों के जवाब में वह बार-बार कह रहा था कि वह मौसम संबंधी जानकरिया जुटाए वाला सामान्य गुब्बारा है, जो हवा के बहाव की वजह से अमेरिकी सीमा में चल गया है, लेकिन इसे मार गिराये जाने के बाद जिस तरह की तीखी प्रतिक्रिया चीन की तरफ से आयी है, वह इन आशंकाओं को बल प्रदान करती है कि इसके पीछे कांग और बड़ा मक्सद था। बहरहाल, विशेषज्ञ जहां मौजूदा मायले में जासूसी की संभावनाएं बोकारों की भाँति रही हैं और वह भी रेखांकित करते हैं कि समय के साथ चीन की सबलांस गतिविधियों में न केवल इजाफा हुआ है, बल्कि वह काफी परिष्कृत भी होती गयी है। ऐसे में इस गुब्बारा प्रकरण को भारत के राजधानीय बासुकिल उभर पायी थी। 2008 में लेहांग ब्रदर्स के पतन के बाद अमेरिका में गिरावट-अमेरिका में गिरावट की आवाजें आने लगीं और ये आवाजें अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी के भारत के लिए भी अलान बेल की तरह लिया जाना चाहिए। इसकी कई ठोस बजहें हैं। पहली तो यही कि भारत के साथ लगती चीन की जीमीनी सीमा का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। दूसरी बात यह कि इस विस्तृत सीमा क्षेत्र को लेकर कई बिंदुओं पर दोनों देशों में तीखे मरम्भेद रहे हैं। तीसीं बात यह कि हाल में हुए टकराव के बाद से लदाख और अरुणाचल प्रदेश से लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव जारी है, जिसे कम करने की कोशिशों फलित नहीं हो रही। सबसे बड़ी बात यह कि ऐसे माहौल में चीन की तरफ से जासूसी आतिविधानी चलाने की कोशिशों के बाद भी मिलते रहे हैं। पिछले साल शीर्लांका के हैबनटोटा पोर्ट पर रिसर्च वेसल के रूप में जासूसी जहाज भेजने की बात अभी पुरानी नहीं पड़ी है। 2020 में ही एक जांच से यह बात भी सामने आयी थी कि शेनचेन की एक टेक्नोलॉजी फर्म भारत के 10,000 से ज्यादा प्रभावशाली लोगों के डेटा इकट्ठा कर रही है। जहिर है, भारत को न केवल चीकसी बनाये रखनी होगी, बल्कि समान सोच वाले देशों के साथ मिल कर इन संभावित प्रयासों की कार्रवाई काट तैयार करने की प्रक्रिया भी तेज करनी होगी।

पांच साल बाद अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी लिंकन के चीन जाने का कार्यक्रम तय हुआ था, लेकिन गुब्बारा प्रकरण का पहला साइड इफेक्ट यही हुआ कि लिंकन का पीन दौरा रद्द हो गया। उधर, चीन ने भी गुब्बारा मार गिराये जाने के बाद जिस तरह की तीखी प्रतिक्रिया चीन की तरफ से आयी है, वह इन आशंकाओं को बल प्रदान करती है कि इसके पीछे कांग और बड़ा मक्सद था। बहरहाल, विशेषज्ञ जहां मौजूदा मायले में जासूसी की संभावनाएं बोकारों की भाँति रही हैं और वह भी रेखांकित करते हैं कि समय के साथ चीन की सबलांस गतिविधियों में न केवल इजाफा हुआ है, बल्कि वह काफी परिष्कृत भी होती गयी है। ऐसे में इस गुब्बारा प्रकरण को भारत के लिए भी अलान बेल की तरह लिया जाचाहिए। इसकी कई ठोस बजहें हैं।

पांच साल बाद अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी

लिंकन के चीन जाने का कार्यक्रम तय हुआ था, लेकिन गुब्बारा प्रकरण का पहला साइड इफेक्ट यही हुआ कि लिंकन का पीन दौरा रद्द हो गया।

उधर, चीन ने भी गुब्बारा मार गिराये

जाने के बाद तत्त्व बयान दिया है।

## अभिमत आजाद सिपाही

बिंगिंग और मास्को के बीच किसी भी सीमा के बिना दोस्ती ने बिल्ली को कबूतरों के बीच खड़ा कर दिया। इस चीन-रुसी सामंजस्य का ईरान और सऊदी पूर्व एशियन के गुरुत्वाकांशी ने इसे वाशिंगटन के साथ मजबूती दी थी। जब से विदेशी आर्थिक नीतियों ने उभरने से रुसी पूर्व एशियन के बीच खड़ा कर दिया है।

## वियतनाम : चीन की तुलना में आर्थिक सफलता की एक कहानी है

### सर्वद नक्की

यह अनुमान लगाना संभव है कि रूस के विशेष सैन्य अधियान 24 फरवरी 2022 को शुरू नहीं किये गये होते यदि अमेरिका और पश्चिमी देशों ने ढोल पीट कर रूस को यूक्रेन में छछ युद्ध के लिए उभाने के लिए जोर न दिया होता। 4 फरवरी 2022 को बींजिंग में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रुसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच आम सहमति समझौते पर हस्ताक्षर करने की घोषणा के बाद पश्चिमी देशों के मुंह से ज्ञान निकलने लगी। दोनों देशों ने कहा कि वह एक असीमित दोस्ती है।

इन परिवर्तनों में चीन और रूस की जोड़ी ने एक-दो पंच सीधे पश्चिमी देशों में न केवल इजाफा हुआ है, बल्कि वह काफी परिष्कृत भी होती गयी है। ऐसे में इस गुब्बारा प्रकरण को भारत के लिए भी अलान बेल की तरह लिया जाचाहिए। इसकी कई ठोस बजहें हैं। उसी क्रम ने वाशिंगटन और लंदन को भी झकझो कर रख दिया। पिछले वर्ष अगस्त में अफगानिस्तान की परायज वीरी गहरी शर्मिंदगी से अमेरिका और बिटेन की राजधानीय बासुकिल उभर पायी थी। 2008 में लेहांग ब्रदर्स के पतन के बाद अमेरिका में गिरावट-अमेरिका में गिरावट की आवाजें आने लगीं और ये आवाजें अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी के भारत के लिए भी अलान बेल की तरह लिया जाचाहिए।

यह अनुमान लगाना संभव है कि चीनी तुलना में आर्थिक सफलता की एक कहानी है जिवाय के विवरण के बाद अक्षय बहुत अलग है।

वियतनाम

चीनी तुलना में आर्थिक सफलता की एक कहानी है जिवाय के विवरण के बाद अक्षय बहुत अलग है।

लेकिन युरोपीय राजनेताओं ने

2 समांतर रेखाओं को बनाये रखना शुरू कर दिया-एक अपने धेरेलू दर्शकों के लिए और दूसरा ब्रसल्स और वाशिंगटन के लिए।

हंगरी के विक्टर ओरेबान ने



1979 में समाचार पत्रों की काफी विवरणीयता थी। जब तक कि चीन वियतनाम सुन्दर जैसी घटना नहीं हुई। चीन ने वियतनाम को सबक सिखाने की धमकी दी थी। पश्चिमी मीडिया ने इस लड़ाई पर कोई ध्यान

नहीं दिया, जहां वियतनामियों ने चीनियों को रोटा था।

अपनी स्पष्टवादिता के लिए चीनी विवरणीयता थी। उन्होंने कहा कि चीनी वियतनाम के साथ मजबूती से ला खड़ा कर दिया, तब से ही भारत एसांझे वर्षों में व्यापक रूप से भारतीय नीति में एक निश्चित अस्पष्टता प्रस्तुत की है, जिसने इसे मास्को से प्रस्तुत करने में मदद की है। प्रौढ़ने गोपनीय बैठक के लिए अपने सभी राजनीतिकों और वरिष्ठ अधिकारियों को अमन्त्रित किया। मैक्राने ने उन्हें एक नयी विषय व्यवस्था के लिए खुद को तैयार करने के लिए कहा।

बींजिंग और मास्को के बीच

किसी भी सीमा के बिना दोस्ती ने बिल्ली को कबूतरों के बीच खड़ा कर दिया। इस चीन-रुसी सामंजस्य का ईरान और सऊदी अरब जैसी शक्तियों तथा कई अन्य देशों पर एक व्यापक रूप से परायें रखने के लिए चीनी विवरणीयता थी। अपने लगायी थी।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की नवीनी उदायबादी आर्थिक नीतियों ने इसे वाशिंगटन के साथ मजबूती से ला खड़ा कर दिया। शी जिनपिंग ने कहा कि चीन और वियतनाम का अनुसरण करता है, 2 हफ्ते पहले वियतनाम के राष्ट्रपति गुरुन जुआन फुक को इस्तीफा देने के लिए जैसी घटना पड़ा, क्योंकि उनकी करीबी प्रधानमंत्री उदायबादी के उचित स्तर में फंस गया। 1979 में चीन वियतनाम संवधं बनाया गया था जब तक विवरणीय युद्ध का पहला मौका था जब भी मैंने पश्चिमी मीडिया, उसकी व्यवसायिकता और उसके पूर्वग्राहों के बारे में कुछ शुरुआती सबक सीखे। मीडिया के लिए हालांकि यह एक अलग दुर्भागी थी।

पश्चिमी चिंताओं को जोड़ने के

लिए हालांकि से एक शीर्षक आया है, जिसके तहत कहा जाता है कि वियतनाम का साथ एक सांझा भविष्य देखता है। शी जिनपिंग ने नये अनुयायियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इसके विपरीत पश्चिमी खेमों और देशों के बीच संघर्ष असाधारण होता है।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने विवरणीयता की नवीनी उदायबादी आर्थिक नीतियों ने इसे वाशिंगटन के साथ मजबूती से ला खड़ा कर दिया है। शी जिनपिंग ने कहा कि चीन और वियतनाम का अनुसरण करता है, 2 हफ्ते पहले वियतनाम का अनुसरण करता है, उदायबादी के उचित स्तर में फंस गया। 1979 में चीन वियतनाम संवधं बनाया गया था जब तक विवरणीय युद्ध का पहला मौ











